| SNEHA MEENA | [redacted] | [redacted]gmail.com |
|---|---|---|
| NAME | Mobile No. | Email ID |

Start Time: 7.50pm End Time: 11.00pm

# ANSWER SHEET

# (FULL TEST II- MEDIEVAL INDIA)

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Time Allowed: 180 Minutes

Maximum Marks: 250

==========

There are EIGHT questions in this paper.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question No. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

इस पेपर में आठ प्रश्न हैं।

अभ्यर्थी को कुल मिलाकर पांच प्रश्न हल करने होंगे। प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं और शेष में से तीन का उत्तर देना होगा।

किसी प्रश्न/भाग के अंकों की संख्या उसके सामने अंकित होती है। प्रश्नों में शब्द सीमा, जहां भी निर्दिष्ट हो, का पालन किया जाना चाहिए।

प्रश्नों के प्रयासों को क्रमिक क्रम में गिना जाएगा। जब तक काट न दिया जाए, किसी प्रश्न का प्रयास गिना जाएगा, भले ही आंशिक रूप से प्रयास किया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी भी पृष्ठ या पृष्ठ के भाग को स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

==========

## Comments after evaluation

**Marks:**

**Comments for improvement:**

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY

Candidates must not write on this margin

Q.1

## SECTION A

Answer the following in about 150 words each: 10x5=50

Q.1(a) "Young Bengal left little distinctive or permanent impression on the plane of religion and philosophy." Critically examine. [10 Marks]

"युवा बंगाल ने धर्म और दर्शन के धरातल पर बहुत कम विशिष्ट या स्थायी प्रभाव छोड़ा।" आलोचनात्मक परीक्षण करें। [10 अंक]

औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन मे पाश्चात्य तत्वो और भारतीय चेतना की प्रतिक्रिया से समाज-धर्म सुधार / पुनर्जागरण आंदोलन की शुरुआत हुई जिसमें बंगाल का "यंग बंगाल" आंदोलन महत्वपूर्ण था।

"युवा बंगाल": धर्म और दर्शन के धरातल पर बहुत कम प्रभाव परन्तु विशिष्ट स्थायी प्रभाव

(1) धर्म दर्शन क्षेत्र मे धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनायी

(2) तर्कवाद और मानवतावाद से भारतीय समाज का मूल्यांकन

(3) भारतीय धार्मिक कर्मकाण्ड की आलोचना और प्रभाव, निम्न वर्ग दलित वर्ग, महिला वर्ग के उत्थान की वकालत की।

(4) विचार और अभिव्यक्ति का समर्थन

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.1 (b)

- सिविल सेवाओं के भारतीयकरण की माँग तथा किसान शोषण मुद्दे को उठाया

हालांकि यंग बंगाल आंदोलन के नेतृत्वकर्ता युवा वर्ग था और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने उन्हें बंगाल सभ्यता का अग्रदूत कहा था।

हॉलांकि यह युवा बंगाल आंदोलन अपनी प्रकृति में पाश्चात्यवादी रहा था जिसने भारतीय विविध धार्मिक स्वरूप की आलोचना कि ~~से~~ काली देवी का मैडम काली कहकर मज़ाक उड़ाया था।

यह भारतीय समाज में रेडिकल परिवर्तन की वकालत करता था जो कि उस समय संभव नहीं था

हालांकि फिर भी भारतीयों को राजनीतिक शिक्षा देने में युवा बंगाल आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.1 (b) "Bengal united is power; Bengal divided will pull several different ways." Comment on this statement in the context of the division of Bengal in 1905. [10 Marks]

"एकजुट बंगाल ही शक्ति है; विभाजित बंगाल कई अलग-अलग रास्ते अपनाएगा।" 1905 में बंगाल के विभाजन के संदर्भ में इस कथन पर टिप्पणी करें। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

16 oct 1905 में गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्ज़न ने प्रशासनिक पुनर्गठन के नाम पर बंगाल का विभाजन कर दिया हालांकि वास्तविक उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करना रहा था।

20 वीं सदी के आरंभिक दौर में भी बंगाल राष्ट्रीय आंदोलन का केंद्र रहा था जहां हिंदू-मुस्लिम एकता अपने प्रभावशाली स्तर पर थी इस लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने बंगाल विभाजन की योजना बनायी जिसके तहत बिहार, उड़ीसा को अलग प्रांत और प. बंगाल बांग्लादेश (वर्तमान) और असम को एक अलग प्रांत बना दिया।

2.1 (c)

विभाजन के पीछे शासन का घोषित उद्देश्य था प्रशासनिक सुलभता अर्थात अलग-अलग क्षेत्रों का प्रशासन सुलभ हो सकेगा। परन्तु वास्तविक उद्देश्य बंगाल राष्ट्रवाद को विभाजित करना था जहाँ पर हिंदू और मुसलमानों के संगठित रूप में राष्ट्रवादी भावना प्रबल थी।

बंगाल विभाजन ने भले ही कागजों में बंगाल को अलग-2 क्षेत्रों में विभाजित कर दिया परन्तु वास्तव में इसने राष्ट्रवादियों और राष्ट्रवादी भावना को जनसामान्य से जोड़ दिया।

विभाजन की प्रतिक्रिया में स्वदेशी आंदोलन में महिला, किसान, मुस्लिम, छात्र, पूंजीपति सभी वर्गों की भागीदारी ने विभाजन के उद्देश्य पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया और इसके साथ भारतीय राष्ट्रवाद जनराष्ट्रवाद की ओर बढ़ा।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.1 (c) "We have now an open conspiracy to free this country from foreign rule and you, comrades, and all our countrymen and countrywomen are invited to join it." Discuss Nehru's perspective in this statement of Lahore Session of 1929. [10 Marks]

"अब हमारे पास इस देश को विदेशी शासन से मुक्त करने की खुली साजिश है और आप, साथियों, और हमारे सभी देशवासियों को इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है।" 1929 के लाहौर अधिवेशन के इस कथन में नेहरू के परिप्रेक्ष्य पर चर्चा करें। [10 अंक]

1929 मे लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए जवाहर लाल नेहरू ने "पूर्ण स्वराज" का लक्ष्य स्वतंत्रता आंदोलन का एकमात्र लक्ष्य घोषित किया।

लाहौर अधिवेशन - 1929

(1) इसमें पहली बार सभी भारतीयो से पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य के साथ जुड़ने का आह्वान किया।

(2) रावी नदि के तट पर भारत का तिरंगा झंडा फहराया गया और घोषित किया कि 26 जनवरी 1930 से प्रत्येक वर्ष इसी दिन स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

(3) लाहौर अधिवेशन में गाँधीजी पुनः राष्ट्रीय राजनीति में कूद गए और कांग्रेस ने उन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की घोषणा की।

(4) इस अधिवेशन में भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति भी प्रदर्शित की और समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में किसान वर्ग और श्रमिक वर्ग के पक्ष में प्रावधान लाए जिन्हें जिनकी पुष्टि कराची अधिवेशन में हो गई

हालांकि इस अधिवेशन में नेहरू ने पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कि परन्तु अभी भी भारत स्वतंत्रता से दूर था नेहरू रिपोर्ट में डोमिनियन स्टेटस की मांग और 1935 के अधिवेशन के प्रावधान यह सिद्ध करते हैं।

(5) लाहौर अधिवेशन में नेहरू के बुद्धिजीव की जीत 1947 में भारत स्वतंत्रता के साथ पूरी हुई।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.1 (d) "Though the Act of 1919 was superseded by that of 1935, the preamble to the former was not repealed- the preservation of the smile of Cheshire cat after its disappearance, and the latter said nothing about dominion status." Comment. [10 Marks]

"यद्यपि 1919 के अधिनियम को 1935 के अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था, पूर्व की प्रस्तावना को निरस्त नहीं किया गया था - चेशायर बिल्ली के लुप्त होने के बाद उसकी मुस्कान को संरक्षित किया गया था, और बाद में डोमिनियन स्थिति के बारे में कुछ नहीं कहा गया था।" टिप्पणी करें। [10 अंक]

1919 के शासन अधिनियम में प्रस्तावना में क्रमिक उत्तरदायी शासन की बात कि गई और फिर 1935 के अधिनियम इसी प्रस्तावना को शामिल किया गया अर्थात नई कोई प्रस्तावना नहीं लायी गई।

इसके पीछे निम्नलिखित कारण उत्तरदायी है -

(1) प्रोत उत्तरदायी शासन से आगे ब्रिटिश सरकार भारतीयो को आगीदारी देने से परहेज कर रही थी।

(2) 1919 अधिनियम कि प्रस्तावना ने राष्ट्रीय आंदोलन को नेताओं में स्वशासन की तीव्रता को बढ़ा दिया गया था।

(3) साइमन कमीशन ने देश मे उत्तरदायी शासन और डोमिनियन स्टेटस का विरोध किया

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

था।

(4) ब्रिटिश शासन सीमित प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व सौंपकर जनअसंतोष को कम करने का ढोंग रच रहा था।

1919 अधिनियम के प्रावधान भारतीयों को संतुष्ट नहीं कर सके और 1928 में नेहरू रिपोर्ट से डोमिनियन स्टेटस की मांग की और लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन से व्यापक ~~जनभागीदारी~~ जनभागीदारी और समाजवादी विचारधारा, जाति आंदोलन से आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता की मांगों ने ब्रिटिश शासन को भयभीत कर दिया।

इसलिए 1935 का अधिनियम में उत्तरदायी सरकार का प्रावधान नहीं लाया (डोमिनियन स्टेटस) और फिर नेहरू ने इसे बिना इंजन के ब्रेक की संज्ञा दी।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.1 (e) Give a brief account of the uprising of Telangana in late 1940s. [10 Marks]

1940 के दशक के अंत में तेलंगाना के बिद्रोह का संक्षिप्त विवरण दें। [10 अंक]

1940 के दशक मे 1945-46 मे द० भारत मे तेलंगाना आंदोलन एक प्रमुख किसान आंदोलन रहा था क्योंकि वहा राष्ट्रवादी भावना, समाजवादी विचारधारा से प्रेरित था।

1940 दशक - तेलंगाना विद्रोह

(1) यह किसान विद्रोह लगभग 3 हजार गांवो और 30 लाख जनसंख्या तक विस्तारित था।

(2) इस विद्रोह मे किसानो ने नियमित रूप से गुरिल्ला युद्ध रणनीति का प्रयोग औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध किया।

(3) आंदोलन का प्रमुख कारण था अत्यधिक भूराजस्व, जमींदार वर्चस्व और महाजनो का शोषण।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

इस विद्रोह में किसानों के साथ-साथ असंतुष्ट छोटे ज़मीदार भी शामिल थे।

— विद्रोह में महिलाओं की भूमिका रही थी।

**विद्रोह का परिणाम**

यह विद्रोह अपने प्रभाव में अधिक सफल माना जाता है जैसे कि

→ बेदखली के विरुद्ध सुरक्षा
— बेगार प्रथा समाप्त
— तर्कसंगत भूराजस्व
— महिलाओं के हित में प्रावधान
— ज़मीदारों और महाजनों पर लगाम।

आगे फिर इस आंदोलन का प्रभाव राजनीतिक रहा। इसने पृथक आंध्र प्रदेश की मांग को प्रेरित किया।

इस प्रकार 1940 दशक का तेलंगाना विद्रोह अपने प्रभाव में महत्वपूर्ण रहा था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.2 (a) "The Dual System of Government led to the power being divorced from responsibility, lawlessness, heightened abuse of private trade, severe oppression of peasantry and was a complete failure but still it can be considered as political sagacity of Clive." Examine. [20 Marks]

Candidates must not write on this margin

"सरकार की दोहरी प्रणाली ने सत्ता को जिम्मेदारी से अलग कर दिया, अराजकता, निजी व्यापार का दुरुपयोग बढ़ा, किसानों पर गंभीर अत्याचार हुए और यह पूरी तरह से विफल रही, लेकिन फिर भी इसे क्लाइव की राजनीतिक बुद्धिमता माना जा सकता है।" परीक्षण करें। [20 अंक]

1764 में बक्सर विजय के पश्चात कंपनी (ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी) को इलाहाबाद की संधि के तहत बंगाल, बिहार, ओड़िशा की दीवानी प्राप्त हुई और इसी के साथ रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में ब्रिटिश कंपनी आर्थिक शक्ति से एक राजनीतिक शक्ति बन गई।

## बंगाल में द्वैध शासन (1765-72)

1765 में रॉबर्ट क्लाइव ने बंगाल में शासन को दो हाथों में विभाजित कर दिया जैसे कि

- राजस्व प्रशासन कंपनी के अधिकार में (दीवानी)
- शासनिक जिम्मेदारी — बंगाल के नवाब के हाथों में।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

हालांकि सामान्य प्रशासन पर कंपनी का सम्पूर्ण नियंत्रण जैसे — नवाब के अधीन उपनवाब का पद गठित जिसको नियुक्त करने का अधिकार कंपनी को प्राप्त।

**द्वैध शासन के प्रभाव**

(1) सत्ता को जिम्मेदारी से अलग कर दिया

— बंगाल के नवाब में अधिकार निहित जिम्मेदारी प्राप्त थी परन्तु उसने स्वयं को कंपनी के अधीन मानकर जनता के शासन दायित्व से अलग कर लिया अर्थात कंपनी के भूराजस्व मामलो में उसने पूर्णत अहस्तक्षेप की नीति रखी।

— इससे जनसामान्य पर कंपनी और व्यापारियो का वर्चस्व - अत्यधिक भूराजस्व, शोषण।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

(2) निजी व्यापार का दुरुपयोग

— बिना जिम्मेदारी के व्यापारी मनमानी तरीके से बंगाल के शिल्पियो से ~~२०~~ निम्न किमत पर सामान खरीदकर उच्च किमत पर बेचते।

— निजी व्यापार पर शासन का नियंत्रण कमजोर इससे व्यावसायिक नैतिकता का भरपुर उल्लंघन

(3) किसानो पर अत्याचार और बंगाल मे अकाल और भुखमरी की घटनाए.

— किसानो की ~~क्रि~~ क्रय शक्ति गिरावट के कारण वे अकाल का सामना नही कर पाए और 1770 ईशक मे 1/3 बंगाल जनसंख्या अकाल से मृत्यु लोक मे पहुंच गई।

इस प्रकार अपने प्रभावो मे द्वैध शासन पूर्णत विफल रहा था परन्तु प्रारंभिक रूप मे यह शासन का यह रूप परिस्थितियो के अनुकुल

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

था इसलिए क्लाइव की राजनीतिक बुद्धिमता का प्रतीक उदाहरण जैसे कि राजनीतिक गतिविधियों और उत्तरदायित्व से बचना और अधिक मुराजस्व वसूल करके आपार में निवेश।

- विदेशी केपनियो और भारतीयो के विरोध से बचना और साथ ही ब्रिटिश शासन के संसदीय नियंत्रण से कंपनी व अधिकारियों को दूर रखना।

परन्तु फिर भी इसके प्रभावों के कारण यह राजनीतिक बुद्धिमता नही क्योंकि इसने भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर कंपनी को गरीब और अधिकारियों को अमीर बना दिया। स्वयं क्लाइव पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा। ~~और~~

अतः फिर 1772 मे वॉरेन हेस्टिंग्स ने इसे समाप्त कर प्रत्यक्ष नियंत्रण मे लाया और 1773 के रेग्युलेटिंग एक्ट ने कंपनी पर संसदीय नियंत्रण की शुरुआत की।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.2 (b) Critically examine Orientalism versus Anglicanism debate and how it was solved. [20 Marks]

ओरिएंटलिज्म बनाम एंग्लिकनवाद विवाद की आलोचनात्मक जांच करें और इसे कैसे हल किया गया। [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

भारत में औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन की राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक नीतियाँ ब्रिटेन में पूंजीवाद के बदलते स्वरूप के साथ बदली गई और 1800 की सदी में औद्योगिक पूंजीवाद के रूप में जब परिवर्तन से शासन नीति बदली जिसका एक उदाहरण है प्राच्यवादी – आंग्ल विवाद।

## प्राच्यवादी - आंग्ल विवाद

- प्राच्यवादियों ने ब्रिटिश वाणिज्यवादी पूंजीवादी हित में भारत में भारतीय संस्कृति का गुणगान किया और कि भारतीयों को देशी भाषा में शिक्षा देने की मांग की।

उसी तरफ औद्योगिक पूंजीवाद से प्रेरित पाश्चात्यवादी जैसे मैकाले और इवेनियर ने भारतीयों को पाश्चात्य शिक्षा अंग्रेजी भाषा

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

में देने की मांग की। अंग्रेजवादी भारतीय भाषा, संस्कृत के आलोचक थे

बंगाल लोक शिक्षा समिति (1823) में भाषाई मुद्दे पर पाश्चात्यवादी और प्राच्यवादी आपस में विरोधी के रूप में उभरकर आए और यही विवाद प्राच्यवाद - आंग्ल विवाद कहलाता है।

प्राच्यवादियों का उद्देश्य - इनका उद्देश्य था कि देशी भाषा में ज्ञान का प्रसार नीचे तक होगा और भारतीय पश्चिमी संस्कृति के अधिक करीब आयेंगे। इनका बल भी पाश्चात्यवादियों के समान पश्चिमी ज्ञान - विज्ञान की शिक्षा पर था और उद्देश्य भी ब्रिटिश शासन के हित में ही था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

आंग्लवादियों का उद्देश्य – इनके ब्रिटिश अंग्रेजवाद प्रभावी था जिसमें ब्रिटिश संस्थाएं ही सर्वोच्च है और भारत को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में सक्षम है।

इनके उद्देश्य निम्न रहें

- अंग्रेजी भाषा प्राप्त भारतीयों को निम्न प्रशासनिक पदों पर नियुक्त करना
- अंग्रेजी भाषा प्राप्त भारतीय ब्रिटिश उत्पादों के अच्छे ग्राहक होंगे।
- भारतीयों को ब्रिटिश सभ्यता से जोड़ना।
- ईसाई धर्म का प्रसार करना।

इस विवाद का समाधान करने के लिए 1833 के चार्टर एक्ट में प्रावधान लाया कि भारत में पश्चिमी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा होगी।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

फिर 1835 में, लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के तहत पश्चिमी अंग्रेज़ी शिक्षा भारत में औपचारिक रूप में लागू हो गई

एक तरफ अंग्रेज़ी शिक्षा का उद्देश्य था एक ऐसा वर्ग तैयार करना जो रंग और रक्त में भारतीय हो और विचार, वाणी बुद्धि में, आचरण से अंग्रेज हो

वहीं दूसरी तरफ अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग का उद्भव हुआ जिसने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया और अंग्रेज़ी शिक्षा से प्रचार संस्कृति का जन्म हुआ।

इस प्रकार यह विवाद अपने विषय के साथ प्रभाव में महत्वपूर्ण रहा था इसने अंग्रेज़ समर्थक वर्ग को तैयार किया तो स्वतंत्रता आंदोलन को भी प्रेरणा प्रदान की।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.2 (c) "The British policy towards Indian States in 1818-1858 was one of isolation and noninterference tempered by annexation." Comment. [10 Marks]

"1818-1858 में भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति अलगाव और अहस्तक्षेप की थी, जिसे विलय द्वारा नियंत्रित किया गया।" टिप्पणी करें। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

1818 – 1858 के बीच भारत में औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन नीति औद्योगिक पूंजीवादी व्यवस्था की आवश्यकता से प्रेरित रही थी जिसका उद्देश्य था अधिक से अधिक बाजार पर कब्जा करने के लिए राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त करना।

• 1818 में आंग्ल मराठा युद्ध III में ब्रिटिश कंपनी ने मराठा सरदारों को पराजित करके मराठा संघ को भंग कर दिया और मराठा राज्य का अधिकांश भाग बम्बई प्रेसीडेंसी में मिला लिया जिससे महत्वपूर्ण कपास उत्पादक क्षेत्र ब्रिटिश कंपनी के नियंत्रण में आ गया।

- 1824 मे आंग्ल-नेपाल युद्ध → नेपाल क्षेत्र पर कब्जा।
- आंग्ल बर्मा युद्ध -I - उत्तरी बर्मा पर नियंत्रण
- 1845-48 आंग्ल पंजाब युद्ध मे पंजाब को पराजित करके 1848 मे डलहौजी द्वारा पंजाब का विलय।

युद्धो के माध्यम से विजय के अलावा डलहौजी ने अपनी डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स नीति के तहत भारतीय रियासतो का विलय किया जैसे सतारा झांसी, उदयपुर, संभलपुर।

- 1856 मे कुशासन के मुद्दे पर अवध का विलय

इस प्रकार 1818-1858 के बीच ब्रिटिश नीति विस्तारवादी रही थी जिसे विलय सिद्धांत मे पुरा किया और इस प्रकार 2/3 भारत 1858 तक ब्रिटिश कंपनी के नियंत्रण मे आ गया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.5

**SECTION B**

Answer the following in about 150 words each: 10x5=50

Q.5 (a)

"Champaran Satyagraha is a watershed in the freedom struggle in India." Elucidate. [10 Marks]

"चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक मील का पत्थर है।" स्पष्ट कीजिए। [10 अंक]

1918 में बिहार के चंपारण जिले में महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में नील खेती की तीन कठिया पद्धति के विरुद्ध चंपारण सत्याग्रह हुआ।

चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक मील का पत्थर

(1) प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रयोग इसमें गाँधीजी ने ब्रिटिश शासन की आज्ञा का उल्लंघन कर अवज्ञा की।

(2) किसानों की संगठित शक्ति का उपयोग।

(3) शांति पूर्ण सत्याग्रह प्रदर्शन इस का पहला प्रयोग जिसमें सफलता प्राप्त हुई व नील की खेती की तीनकठिया पद्धति को समाप्त कर दिया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

(3) महात्मा गांधी की क्षेत्रीय पहचान और जन-आंदोलन में उपयोग।

(4) किसानो के हित को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर आंदोलन का सामाजिक ~~वित्त~~ आधार विस्थापित)

(5) सहयोगी नेताओ का वर्ग तैयार जैसे कि चंपारण सत्याग्रह मे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और भूला भाई देसाई का सहयोग प्राप्त

हालांकि यह जन आंदोलन की दिशा मे एक शुरुआत थी फिर आगे खेड़ा और अहमदाबाद आंदोलन की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही और असहयोग आंदोलन के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन जन आंदोलन की तरफ मुड़ा। फिर भी इस आंदोलन का महत्व इस बात मे है कि इसमे गांधीजी ने वास्तव में कुछ करके दिखाया

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.5 (b) What were the major political, economic and social developments in the world which motivated the anti-colonial struggle in India? [10 Marks]

विश्व में वे प्रमुख राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक घटनाक्रम क्या थे जिन्होंने भारत में उपनिवेश-विरोधी संघर्ष को प्रेरित किया? [10 अंक]

भारत मे उपनिवेशवादी विरोधी संघर्ष पश्चिमी तत्वों और भारतीय चेतना के बीच अंतक्रिया का परिणाम रहा था।

राजनीतिक घटनाक्रम (विश्व) — उपनिवेशवादी विरोधी संघर्ष

1. फ्रांसीसी क्रांति (1789) — समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व प्रतिनिधित्व के आधुनिक विचारों का जन्म

→ इन विचारो का भारतीय पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त बुद्धजीवियों जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर पर पड़ा और भारत मे ब्रिटिश शासन के विरोधाभासी स्वरूप के विरुद्ध प्रतिक्रिया।

(2) अमेरिकी क्रांति (1783) — प्रथम उपनिवेश स्वतंत्रता अतः इसने भारतीयों की उपनिवेश विरोधी धारणा में ऊर्जा प्रदान की।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

सामाजिक घटना क्रम औद्योगिक क्रांति (1840 के बाद)
आर्थिक घटनाक्रम - औद्योगिक पूंजीवाद - भारत को कच्चे माल का स्रोत बनाना - मुक्त व्यापार की नीति लागू - उपनिवेशिक शोषण परिणामस्वरूप किसान- जनजाति आंदोलन और फिर 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम।

सामाजिक घटनाक्रम - प्रबोधन विचारधारा और फिर उपयोगितावादी समाजवादी विचारधारा (1917 रूसी क्रांति)

- भारत मे धर्म-समाज सुधार आंदोलन
- समाजवादी आंदोलन, जुझारू ट्रेड आंदोलन

फिर आगे प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध मे उत्पन्न परिस्थितियों ने भी भारत मे स्वतंत्रता संग्राम को तीव्रता प्रदान कि।

हालांकि कि वैश्विक घटनाओं के साथ राष्ट्रीय घटनाएं भी महत्वपूर्ण जैसे गाँधीवादी राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (c) "Quit India Movement had developed in phases and streams." Comment. [10 Marks]

"भारत छोड़ो आंदोलन कई चरणों और धाराओं में विकसित हुआ था।" टिप्पणी करें। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

8 Aug 1942 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में महात्मा गाँधीजी द्वारा "करो और मरो" का नारा देते हुए भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया।

भारत छोड़ो आंदोलन - कई चरणों में

1. 8 Aug 1942 आंदोलन में शुरुआत परन्तु सभी कांग्रेसी नेता गिरफ्तार हुए. अतः फिर आंदोलन जनता के नेतृत्व में स्वस्फूर्त संचालित हुआ।

2. दूसरे चरण में आंदोलन का नेतृत्व कई कांग्रेसी नेता जैसे जो कि भूमिगत रूप से युद्ध का संचालन कर रहे थे, के नेतृत्व में हुआ जैसे राममनोहर लोहिया ने अपना नेतृत्व के गुप्त रेडियो से भारतीय

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

जनता को संबोधित किया ।

<u>कई धाराए</u>

1. समाजवादी विचारधारा के नेतृत्व मे आंदोलन
<u>उदा०</u> जयप्रकाश नारायण सक्रिय नेता।

2. क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के नेतृत्व में आंदोलन <u>उदा०</u> सुभाष चंद्र बोस द्वारा सिंगापुर मे समानांतर सरकार की स्थापना।

3. किसान और जनजातीय आंदोलनों के नेतृत्व मे जैसे तेभागा आंदोलन।

4. रियासतों मे प्रजामण्डलो के नेतृत्व में आंदोलन <u>उदा०</u> जोधपुर प्रजामण्डल

हालांकि कई चरणो व धाराओ के बावजूद वह एक समान उद्देश्य स्वतंत्रता और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की छत्रछाया में संचालित होता हुआ चला था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (d) "Post-1857 peasant revolt saw the greater awareness of laws and institutions among the peasantry and involvement of the educated middle class intelligentsia as spokespersons for the aggrieved peasantry." Comment. [10 Marks]

Candidates must not write on this margin

"1857 के बाद के किसान विद्रोह में किसानों के बीच कानूनों और संस्थाओं के बारे में अधिक जागरूकता देखी गई और पीड़ित किसानों के प्रवक्ताओं के रूप में शिक्षित मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों की भागीदारी देखी गई।" टिप्पणी करें। [10 अंक]

1857 के विद्रोह के बाद भी अनेक किसान आंदोलन ब्रिटिश औपनिवेशिक लूंचे के शोषण प्रकृति का परिणाम थे हालांकि किसान आंदोलन की समझ, प्रभाव, प्रकृति और उद्देश्यों मे व्यापकता देखी जई।

1857 के बाद किसान आंदोलन

- नील विद्रोह (1859) → किसानो के साथ-साथ भारतीय बुद्धिजीवियों का समर्थन जैसे कि दीनबंधु पत्र मे किसानो की दुर्दशा का वर्णन पहला पहला आंदोलन जहां बुद्धिजीवी और छोटे जमिंदार वर्ग किसानो के समर्थन मे आए परिणामस्वरूप 1860 नील आयोग की सिफारिश इस डस क्षेत्र मे नील की खेती बंद कर दी गई।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (e)

(2) पाबना विद्रोह (बंगाल) 1872-73 - इसमें किसानों ने मिलान संघ गठित करके न्यायालयों के समक्ष न्याय की गुहार लगाई।

(3) दक्कन किसान विद्रोह (1877-78) - यह आंदोलन प्रभाव में अल्प और प्रभावी रहा था दक्कन किसान राहत अधि० 1879 से राहत।

हालांकि इन आंदोलन का आधार क्षेत्रीय और उद्देश्य सीमित और दृष्टिकोण संकीर्ण था। अभिजात भी वे ब्रिटिश शक्ति से वास्तविक रूप से परिचित नहीं थे।

इनकी प्रकृति अहिंसावादी और हरित प्रतिक्रिया के समान रही थी फिर आगे 20 वीं सदी में ही किसान आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन के साथ संगठित हो गए।

फिर 1857 के बाद के किसान आंदोलनों ने 20 वीं सदि के किसान आंदोलनों को प्रेरणा प्रदान की।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (e) Do you agree that the annexation of Awadh and summary settlement of 1856 were the major causes of 1857 uprising? Comment. [10 Marks]

Candidates must not write on this margin

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि अवध पर कब्जा और 1856 का संक्षिप्त बंदोबस्त 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण थे? टिप्पणी करें। [10 अंक]

1857 का विद्रोह अपनी व्यापकता तीव्रता, सामाजिक आधार और परिणामों के संदर्भ में पूर्व के आंदोलन से विशिष्ट रहा था जिसके लिए 1757 के बाद ब्रिटिश शासन के 100 वर्षों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक नीतियां उत्तरदायी थी।

अवध का कब्जा → 1857 का विद्रोह कारण।

1. प्रभावी रूप से नवाब की बर्खास्तगी के बाद भी अवध का विलय (1856) विश्वासघात।

(2) ब्रिटिश सेना में 75 हजार सैनिक अवध से थे जिनमें अवध के विलय का असंतोष था और इन्ही सैनिकों ने विद्रोह में प्रमुख भूमिका रही थी।

(3) अवध की रानी बेगम हजरत महल और अवध के

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.6 (a)

तालुकदारो का विद्रोह में भागीदारी होना

1851 का बंदोबस्त → यह काश्तकारो की सुरक्षा के लिए बंगाल में लाया गया था परन्तु इसका प्रभाव सीमित इससे धनी किसानो को लाभ पहुँचाया था इससे किसानो में असंतोष और 1857 विद्रोह में भूमिका रही।

होलांकि ये कारण महत्व रहे परन्तु प्रमुख नही क्योंकि 1857 के बिद्रोह के लिए अनेक कारक उत्तरदायी थे जैसे मुक्त व्यापार नीति, अत्यधिक विस्तारवादी नीति, सैनिको के साथ आवमानिक भेदभाव और भारतीय समाज और संस्कृति में ब्रिटिश शासन का हस्तक्षेप करना।

इस प्रकार अवध के विलय और 1856 के बंदोबस्त के कारणो के साथ अनेक कारक विद्रोह के लिए उत्तरदायी रहे

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.6 (a) On one hand, Gandhiji withdrew the Non-Cooperation Movement on the issue of violence at Chauri-Chaura but on the other hand he had refused to condemn people's violence during the Quit India Movement. Does it show that he was losing faith in the efficacy of non-violence and was willing to deviate from this path? [20 Marks]

एक तरफ गांधीजी ने चौरी-चौरा में हुई हिंसा के मुद्दे पर असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था, लेकिन दूसरी तरफ उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान लोगों की हिंसा की निंदा करने से इनकार कर दिया था। क्या इससे यह पता चलता है कि वह अहिंसा की प्रभावकारिता में विश्वास खो रहे थे और इस मार्ग से विचलित होने को तैयार थे? [20 अंक]

8 Aug 1942 को महात्मा गाँधी ने बंबई के ग्वालियर टैंक से "करो या मरो" के नारे के साथ भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा कि। अतः करो या मरो की मनस्थिति और अहिंसा की कठोर प्रतिबद्धता का अभाव गाँधीवादी अहिंसावादी राजनीति के प्रभाव, महत्व को कम करता है।

- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गाँधीजी ने भारतीयों से अपील की कि वे अहिंसा का मार्ग अपनाए परन्तु अगर वे इससे विचलित होते है तो भी मैं विचलित नही होउँगा।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM 

· उन्होंने असहयोग आंदोलन को 1922 की चौराचौरी की घटना (हिंसात्मक) के बाद वापिस ले लिया परन्तु भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने हिंसा को आवश्यक बुराई मानकर स्वीकार किया और ब्रिटिश शासन क्रूर दमन की प्रतिक्रिया के रूप में वैध ठहराया।

इस प्रकार गाँधीजी की इस मनस्थिति को हम इस बात का आधार नहीं मानसकते कि वे अहिंसा में विश्वास खो रहे थे बल्कि हमें इस प्रकार की विचार परिवर्तन को भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि में खोजना चाहिए।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी आक्रमण का भय और फिर क्रिप्स मिशन की असफलता ने गाँधीजी को इस मन:

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

स्थिति में ला दिया कि वे वरिष्ठ ही जनआंदोलन छेड़ने को तैयार हो गए और कॉंग्रेस अधिवेशन में कहा कि अगर वे समर्थन नहीं करेंगे तो वे स्वयं ही बालू की रेत के बल पर विशाल जन आंदोलन खड़ा करेंगे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों के विभिन्न पक्षों, बदलावों, विचारधारा परिवर्तन और जनप्रकृति से गाँधीजी को अब यह अहसास हो गया था कि इतना बड़ा आंदोलन पूरी तरह अहिंसा पर नहीं चल सकता और जनसामान्य का विचलित होना स्वाभाविक होगा।

यहाँ हमें यह समझना चाहिए कि अहिंसा की उनकी धारणा रूढ़िवादी नहीं बल्कि लचीली और प्रगतिशील थी जो

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

परिस्थितियों के अनुसार बदल सकती थी यद्यपि अहिंसा पर उनका विश्वास अडिग रहा था।

इस प्रकार गाँधीजी की अहिंसा की रणनीति विकासमान गतिशील थी और अत्यंत थोड़े आंदोलन भी अपने अहिंसा की पद्धति के साथ ही शुरू हुआ था यद्यपि परिस्थितियों के अनुकूल इसमें परिवर्तन अपेक्षित रहा था।

इस प्रकार गांधीजी को अहिंसा पर विश्वास बना रहा था आगे उन्होंने इसी आधार पर हिंसक असहयोग विद्रोह का विरोध किया और फिर सांप्रदायिक हिंसक दंगों के बीच शांति स्थापित करने के लिए जनसामान्य से बीच में जाकर अहिंसा का संदेश दिया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.6 (b) Examine the growth of Revolutionary movement after the withdrawal of non-cooperation movement. What differences do you find in their ideology and programmes with the first phase of Revolutionary movement? [20 Marks]

असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद क्रांतिकारी आंदोलन के विकास का परीक्षण करें। क्रांतिकारी आंदोलन के पहले चरण की तुलना में आप उनकी विचारधारा और कार्यक्रमों में क्या अंतर पाते हैं? [20 अंक]

औपनिवेशिक काल में क्रांतिकारी आंदोलन एक पूर्ण स्वतंत्रता के उद्देश्य के साथ अपने हिंसक रणनीति से परिचालित रहा था जिसका विकास दो चरणों में देखा गया।

क्रांतिकारी आंदोलन के पहले चरण की अभिव्यक्ति 1905-1915 दौरान देखी गई और फिर 1920 दशक में इसके दूसरे चरण का उद्भव हुआ जिसके उदय के कारण, इसकी प्रकृति और संगठित स्वरूप प्रथम चरण से अलग रहा था।

**असहयोग आंदोलन की वापसी और क्रांतिकारी आंदोलन**

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन असहयोग आंदोलन के साथ जन आंदोलन बन गया जिसने क्रांतिकारियों

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

द्वितीय चरण (1924-1946) में क्रांतिकारी आंदोलन की विचारधारा और कार्यक्रमों में पहले चरण से भिन्नता स्पष्ट थी जैसे

1. पहले चरण में संगठित करने हेतु धार्मिक प्रतीकों का उपयोग (धार्मिक प्रेरणा) जबकि इस चरण में क्रांतिकारी गतिविधियाँ धर्मनिरपेक्ष रही थी जिसका नेतृत्व भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेता कर रहे थे।

2. पूर्व चरण का आंदोलन सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहता था परन्तु उनके पास ~~स्पष्ट~~ विद्रोहोत्तर स्पष्ट योजना और कार्यक्रम का अभाव जबकि इस चरण में 1928 में एक पत्र से घोषित किया कि हमारा लक्ष्य ब्रिटिश शासन को समाप्त करके एक धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी गणतंत्र की स्थापना करना है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

3. पूर्व चरण की गतिविधियां अधिक व्यक्तिगत हिंसक कार्यवाही जबकि इस चरण में संगठित सामूहिक कार्यवाही पर बल जैसे हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन (1924)

4. पूर्व के चरण में अलोकप्रिय अधिकारियों की हत्या करना, हथियार निर्माण करना, ब्रिटिश शासन विरोधी प्रचार आदि प्रमुख कार्यक्रम

और द्वितीय चरण में संगठित कार्यवाही (HSRA), जनसामान्य तक क्रांतिकारी विचार फैलाना, जनसामान्य को जोड़ना और घोषित हिंसक तरीकों से ब्रिटिश शासन का विरोध जैसे एसेंबली में बम फेंकना आदि कार्यक्रम का स्वरूप रहा।

इस प्रकार समान उद्देश्य के साथ दोनों चरणों कार्यक्रम और विचारधारा में अंतर रहा था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.6 (c) "The Trade Union Movement in India not only supported the call for national struggle at critical junctures, but also impacted its course and character in several ways." Critically examine. [10 Marks]

"भारत में ट्रेड यूनियन आंदोलन ने न केवल महत्वपूर्ण मोड़ पर राष्ट्रीय संघर्ष के आह्वान का समर्थन किया, बल्कि कई तरीकों से इसके कार्यप्रणाली और चरित्र को भी प्रभावित किया।" आलोचनात्मक परीक्षण करें। [10 अंक]

1920 के दशक में भारत में समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में ट्रेड यूनियन आंदोलन का उभार देखा गया जिसके अंतर्गत श्रमिक, किसान को संगठित कर राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ आर्थिक स्वतंत्रता की माँग की गई।

राष्ट्रीय संघर्ष के आह्वान का समर्थन

- 1920 में असहयोग आंदोलन के दौरान श्रमिक भागीदारी और 1930-31 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के बीच व्यापक हड़तालों से श्रमिक लामबंदी ने राष्ट्रीय संघर्ष का आह्वान किया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM 

Q.7 (a)

• 1920 के बाद अहमदाबाद, ~~इलाहाबाद~~ इलाहाबाद बंगाल, मेरठ आदि में हड़तालों में वृद्धि

• श्रमिकों को संगठित करने राष्ट्रीय आंदोलन से थोड़ा 1920 में ~~ऑल~~ ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन का गठन तथा राष्ट्रवाद पर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव

कार्यप्रणाली और चरित्र को प्रभावित किया

राष्ट्रीय आंदोलन और कांग्रेस राजनीति को समाजवाद की ओर मोड़ना जिसका प्रभाव कराची अधिवेशन, लखनऊ अधिवेशन (1938) (1931) पर देखा गया।

हालांकि भारत में ट्रेड आंदोलन साम्यवादी विचारधारा के प्रभाव में राष्ट्रीय आंदोलन से विचलित हुआ परिणामस्वरूप सक्रिय भावना आंदोलन में श्रमिकों की कम भागीदारी देखी गई फिर भी ट्रेड यूनियन आंदोलन ने श्रमिकों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर उसके आधार को व्यापकता बनाया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.8 (a) How Planning was seen as an instrument to remove regional inequality? Critically discuss in detail. [20 Marks]

नियोजन को क्षेत्रीय असमानता को दूर करने के साधन के रूप में कैसे देखा गया? विस्तार से आलोचनात्मक चर्चा करें। [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

स्वतंत्र भारत के समक्ष राष्ट्रीय एकीकरण के बाद सबसे बड़ा मुद्दा था क्षेत्रीय असमानता को दूर करना और समावेशी क्षेत्रीय विकास लाना। और इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आर्थिक नियोजन की रणनीति अपनायी गई।

• 1947 के बाद क्षेत्रीय असमानता ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की विरासत रही थी क्योंकि शासन के दौरान बम्बई, मद्रास, कोलकाता सूरत जैसे क्षेत्रों का विकास अधिक हुआ और अन्य क्षेत्रों में पिछड़ापन बढ़ता गया।

जैसे कि 1947 में कुल औद्योगिक पूंजी का 60% हिस्सा बंगाल, मद्रास बम्बई से तथा पंजाब, बम्बई की प्रति व्यक्ति आय 300+

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

और बिहार ओडिशा की 150-200 रु के बीच

## क्षेत्रीय असमानता और आर्थिक नियोजन

- 1956 की औद्योगिक नीति का उद्देश्य था पिछड़े क्षेत्रों का औद्योगिक विकास करना
- द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1960) के दौरान क्षेत्रीय असमानता दूर करने हुए उपाय —
  - ↳ पिछड़े इलाकों में सरकारी पूंजी निवेश से उद्योगों कि स्थापना करना इसका लाभ मध्यप्रदेश और उड़ीसा, झारखण्ड को सर्वाधिक हुआ।
  - ↳ दूसरा लक्ष्य था निजी पूंजी को क्षेत्रीय असमानता दूर करने का माध्यम बनाना जैसे निजी उद्योगों को पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करने के लिए कर छूट, अनेक रियायतें दी गई।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

↳ फिर आर्थिक नियोजन के दौरान पूर्वी भारत में भिलाई, राउरकेला दुर्गापुर जैसे संयंत्रों की स्थापना का उद्देश्य क्षेत्रीय असमानता को दूर करना था।

↳ नियोजन के रूप में भूमि सुधार, हरित क्रांति जैसे प्रयास भी क्षेत्र और उपक्षेत्रीय असमानता में सहायक होंगे, इन उद्देश्य के साथ लाए गए

सकलता — मूल्यांकन / परीक्षण

• नियोजन के द्वारा क्षेत्रीय असमानता दूर करने का प्रयास यद्यपि सीमित रूप से सफल रहा था, हालांकि कई जगह क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि देखी गई इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी रहे थे जैसे

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

जैसे ∟ राजनीतिक महत्वाकांक्षा की कमी
∟ राज्य सरकारों की अक्षमता तथा
भूमिसुधारों को लागू करने में
अक्षमता का प्रदर्शन

∟ निजी उद्योग अधिक लाभप्रदता के
साथ कि शहरों में स्थापित हुए

∟ भूमि विखण्डीकरण, कृषि पिछड़ापन ने
औद्योगिक विकास को प्रभावित किया था।

हालांकि फिर भी पूर्वी भारत, मध्यप्रदेश में
औद्योगिक विकास निपोषण का परिणाम रहा
था फिर आगे 1991 के बाद आर्थिक
सुधारों ने औद्योगीकरण को मजबूती दी।
हालांकि क्षेत्रीय असमानता की समस्या वर्तमान
में भी विद्यमान है जिसका समाधान क्षेत्र विशिष्ट विकास
रणनीति अपनाने से हो सकता है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.8 (b) What were the main strands in the Civil Disobedience Movement in India? Also discuss the changing role of 'business pressures' in the country. [20 Marks]

भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन के मुख्य पहलू क्या थे? देश में 'व्यापारिक दबावों' की बदलती भूमिका पर भी चर्चा करें। [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

Candidates must not write on this margin

5 मार्च 1930 को गांधीजी ने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी तट की यात्रा करके नमक कानून तोड़कर 12 मार्च 1930 से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की जिसमें विभिन्न वर्गों के साथ पूंजीपति, व्यापारी वर्ग का भी महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

## सविनय अवज्ञा आंदोलन के मुख्य पहलू

1. ब्रिटिश शासन के आर्थिक ढांचे पर प्रहार करना जैसे कर अदा न करना जमींदारों और पूंजीपतियों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ना तथा राष्ट्रीय उद्योगों को प्रोत्साहन देना, बहिष्कार की रणनीति का तीव्र पालन करना।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

2. नमक के मुद्दे पर बुद्धिजीवी और जनसामान्य को संगठित करना।

3. सरकारी अदालतों का बहिष्कार और रियासतों में जनता से जनआंदोलन की अपील करना।

4. भौगोलिक विस्तार को बढ़ाना - जैसे द. भारत में के. केल्पपन, राजगोपालाचारी और पूर्व में राजेन्द्र प्रसाद, उ. पश्चिम अब्दुल गफ्फार खान द्वारा आंदोलन का नेतृत्व किया जाना।

5. सभी वर्गों को आंदोलन से जोड़ना जैसे महिला, छात्र, किसान, श्रमिक, जमींदार, पूंजीपति जनजाति आदि इससे आंदोलन का सामाजिक आधार अधिक समावेशी हुआ

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान व्यापारिक वर्ग की अधिक भागीदारी देखी गई (असहयोग आंदोलन की तुलना में इसके लिए निम्न कारण उत्तरदायी थे —

1. आर्थिक मंदि (1930) से पूंजीपति वर्ग को हानि
2. ~~हिल्टन~~ कमीशन की सिफारिश पर भारतीय रुपये को मजबूत करना, निर्यात प्रभावित
3. ~~साम्राज्य~~ साम्राज्यवादी वरीयता ब्रिटिश उत्पादों को प्राथमिकता
4. ~~भारतीय~~ राष्ट्रीय आंदोलन - स्वदेशी सरकार के भीतर औद्योगिक विकास की आकांक्षा।

इस प्रकार जमनालाल बजाज जैसे उद्योगपति आंदोलन में सक्रिय भूमिका में थे और व्यापारिक वर्ग की भागीदारी के कारण ही

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

इस आंदोलन मे बहिष्कार की कार्यक्रम सबसे ज्यादा सफल रहा था।

हांलाकि कुछ इतिहासकारो का मानना है कि गांधीजी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित किए जाने के पीछे व्यापारिक वर्ग का दबाव रहा था क्योंकि निरंतर हड़ताल, बहिष्कार से इस वर्ग को नुकसान हो रहा था इसलिए बाद मे इन्होने आंदोलन वापिस लेने का कांग्रेस पर दबाव डाला।

हालांकि यह सच है कि कोंग्रेस विभिन्न वर्गो का प्रतिनिधित्व कर रही थी और आंदोलन का वापिस लिए जाने कारण तथाकथित निम्न वर्गीय ~~दलित~~ किसान और जनजातीय आंदोलनो की उग्रता और आंदोलन की घटती लोकप्रियता रहा था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.8 (c) Explain the major policy changes towards India after the British experiences of 1857. [10 Marks]

1857 के ब्रिटिश अनुभवों के बाद भारत के प्रति प्रमुख नीतिगत परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

1857 का विद्रोह विश्व इतिहास में ही किसी औपनिवेशिक शक्ति के विरुद्ध उपनिवेश और उसकी सेना का सबसे बड़ा विद्रोह रहा था और 1857 के बाद ब्रिटेन (भारत में) की नीतियां इस उद्देश्य से परिचालित थी कि कैसे भी 1857 का विद्रोह की पुनरावृत्ति ना हो।

प्रमुख नीतिगत परिवर्तन

1. ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष शासन तथा भारत सचिव ब्रिटेन का प्रतिनिधि।

2. भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाना तथा विस्तारवादी नीति का औपचारिक रूप से त्याग करने की घोषणा

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

3. सैन्य संतुलन – 4 भारतीय सैनिको पर एक ब्रिटिश सैनिक स्थापित।

4. प्रशासनिक विकेंद्रीकरण – 1861 Act. के तहत विभागीय व्यवस्था जिसमें विधि निर्माण में भारतीयों को शामिल करना ताकि जन असंतोष को कम किया जा सके।

5. भारतीय रियासतों के प्रति नीति – लॉर्ड कैनिंग ने उन्हे अपने प्रति वफादार बनाने का प्रयास तथा राजकीय उपाधि अधि. 1876 पारित।

6. प्रशासनिक – संवैधानिक सुधार – क्रमिक भागीदारी का स्वांग रचकर भारत पर अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास करना।

इस प्रकार 1857 के बाद नीतिगत परिवर्तनों का उद्देश्य विद्रोह की पुनरावृत्ति रोकने और भारत पर नियंत्रण मजबूत करने से प्रेरित था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM